– डॉ. प्रेम कुमार

नई कविता के कवि–आलोचक शमशेर बहादुर सिंह का आलोचना कर्म

शोध सार:

'कवियों के कवि' कहे जाने वाले शमशेर बहादुर सिंह ने आलोचना की कोई व्यवस्थित पुस्तक तो नहीं लिखी किन्तु समय–समय पर उन्होंने सुमित्रानन्दन पंत, नरेन्द्र शर्मा, हरिवंश राय बच्चन, उपेन्द्रनाथ 'अश्क', कृशनचंदर, सच्चिदानन्द हीरनन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय', धर्मवीर भारती इत्यादि रचनाकारों के व्यक्तित्व–कृतित्व व उनकी रचनाओं की समीक्षा संबंधित निबंध लिखे, जिनमें से अधिकांश 'हंस' और 'नया साहित्य' नामक पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। इन आलोचनात्मक निबंधों में निरूपित उनके आलोचना कर्म के सैद्धान्तिक व व्यावहारिक पक्ष को समझा जा सकता है। उनके ये निबंध 'दो आब' (1948 ई.) में पुस्तकाकार रूप में संकलित व प्रकाशित हुए। शमशेर बहादुर सिंह ने कविता लिखने से पूर्व हिंदी आलोचना विधा में अपनी विचारोत्तेजक लेखनी चलाई थी। शमशेर की आलोचनात्मक पुस्तक 'दो आब' सन 1948 ई. में आई, जबकि उनकी कविताएँ उसके बाद सन 1951 ई. में अज्ञेय द्वारा संपादित 'दूसरा सप्तक' में छह अन्य कवियों के साथ प्रकाश में आईं। यह अलग बात है कि उन्होंने आलोचना से अधिक कविता विधा में लेखन–कार्य किया और वे उसमें सफ़ल भी हुए किन्तु उनका आलोचनात्मक साहित्य भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। सामान्यतः जिसे अनदेखा कर हिंदी साहित्य प्रेमियों ने बहुत बड़ी भूल की है। इस आलेख में उनके निबंधों में आलोचना के सैद्धान्तिक और व्यावहारिक पक्ष को निरूपित करने का प्रयास किया गया है।

बीज शब्द:

आलोचना, रचनावली, विश्लेषण, निबंध, सम्प्रेषण, समीक्षा, काव्य–कला, सैद्धान्तिक पक्ष, व्यावहारिक पक्ष, रचना–प्रक्रिया

प्रस्तावना:

'नई कविता' आधुनिक काव्य–यात्रा का एक महत्वपूर्ण पड़ाव है। इस समय लोक जीवन की अनुभूति, सौन्दर्यबोध, भाव पक्ष और शिल्प पक्ष के अनेक प्रश्नों को लेकर हिंदी कविता की बनावट, बुनावट और उसकी

निर्मिति से संबंधित बहसों का घमासान दिखाई देता है। फ़लस्वरूप इस दौर के अधिकांश कवि आलोचक की भूमिका निभाते हुए नजर आते हैं। इन्हीं आलोचकों को नई कविता के कवि–आलोचक कहा गया है। इन कवि आलोचकों ने नई कविता का पक्ष रखते हुए उसकी रचना–प्रक्रिया, काव्य–भाषा, सौन्दर्य, बिम्ब, प्रतीक इत्यादि के साथ–साथ सम्पूर्ण भाव और कला पक्ष की निर्मिति तथा विभिन्न निबंधों–लेखों व व्याख्यानों में उन्हें व्याख्यायित कर स्थापित भी किया है। नई कविता के कवि आलोचकों में शमशेर बहादुर सिंह एक प्रमुख हस्ताक्षर हैं। हालाँकि वे मुख्य रूप से कवि हैं किंतु उनकी कविताओं में जितनी गहराई है, उतना ही उनका आलोचनात्मक–चिंतन व्यापक है। उनकी आलोचना–दृष्टि देश और काल की सीमा को लाँघते हुए हिंदी के आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक के पद्य–गद्य साहित्य का अन्वेषण करती है, केवल इतना ही नहीं बल्कि उन्होंने देशी–विदेशी साहित्य अथवा साहित्यकारों का भी बारीकी से अध्ययन–विश्लेषण किया है। उनका आलोचना–साहित्य विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित निबंधों, आलेखों, पुस्तक–समीक्षाओं, टिप्पणियों, साक्षात्कारों तथा व्याख्यानों में व्यक्त हुआ है। उनके समस्त आलोचना–कर्म का कुछ भाग उनके जीवनकाल में तथा अधिकांश भाग उनके मरणोपरांत पुस्तकाकार अथवा रचनावलियों के रूप में संकलित व संपादित होकर प्रकाशित हुआ है।

आलेख विस्तार:

प्रेम और सौन्दर्य के कवि के रूप में प्रख्यात शमशेर बहादुर सिंह (मूलनाम–कुलदीप सिंह) का जन्म 03 जनवरी सन 1911 ई. को अपने ननिहाल देहरादून में हुआ था। उनके पिता का नाम तारीफ़ सिंह और माता का नाम परमदेवी है, जो कि उनके पिता की तीसरी पत्नी थीं। उनके पिता की दो पत्नियों का विवाह के मात्र तीन साल के अंतराल में ही देहांत हो गया था। जब शमशेर महज 7–8 वर्ष के थे, तब उनकी माँ की मृत्यु हो गई थी। शमशेर का पैतृक गाँव एल्लम, जिला मुजफ्फ़र नगर, उत्तर प्रदेश है। जहाँ वे कभी नहीं जा सके। शमशेर की प्रारम्भिक शिक्षा उनके ननिहाल देहरादून में के. पी. मिशन हाईस्कूल से हुई, यहीं से उन्होंने सन 1928 ई. में हाईस्कूल की शिक्षा प्राप्त की और इंटरमीडिएट की शिक्षा प्राप्त करने हेतु वे गोंडा, उत्तर प्रदेश चले गये, वहाँ से वे 1931 ई. में इंटरमीडिएट की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए तथा स्नातक सन 1938 ई. में इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद से उत्तीर्ण करने के पश्चात वहीं से स्नातकोत्तर (एम.ए.) की शिक्षा प्राप्त करने लगे। उन्होंने 1938 ई. में एम.ए. प्रथम वर्ष की परीक्षा भी पास की लेकिन किन्हीं कारणों से अंतिम वर्ष (द्वितीय वर्ष) की पढ़ाई पूरी नहीं कर सके। शमशेर बहादुर सिंह नम्र, भावुक और निश्छल हृदय वाले एक संघर्षशील रचनाकार हैं। उनका देहांत 12 मई सन 1993 ई. को रंजना अरगड़े

(जो कि उनके साहित्य पर शोधकार्य करने वाली शोधार्थी थीं) के निवास स्थान अहमदाबाद, गुजरात में हुआ था। शमशेर बहादुर सिंह को अज्ञेय द्वारा 'दूसरा सप्तक'(1951 ई.) कविता के एक महत्वपूर्ण कवि के रूप में जाना जाता है किन्तु उन्होंने कविता के अतिरिक्त गद्य की विभिन्न विधाओं कहानी, आलोचना, डायरी एवं पत्र साहित्य अनुवाद इत्यादि में भी लेखन कार्य किया है।

'दो आब' में संकलित निबंधों में शमशेर ने साहित्यालोचन की एक विशेष प्रकार की दृष्टि के विकास का प्रयास किया था, हालाँकि वे स्वयं इसका पूर्ण–विकास न कर कविता–विधा में सृजनरत हो गये इसलिए उनकी रेखाएँ अस्पष्ट रह गईं। 'दो आब' नामक इस आलोचनात्मक पुस्तक से ही समकालीन आलोचना की शुरुआत मानी जाती है। डॉ. रामबक्ष के शब्दों में– "चाहे जो स्थिति हो, समकालीन आलोचना की शुरुआत शमशेर सिंह की पुस्तक 'दो आब' (1948 ई.) से मानी जा सकती है। शमशेर को हम कवि रूप में जानते हैं, यहाँ तक कि इन्हें 'कवियों का कवि' तक मान लिया गया है। उनकी छवि एक अतिसंवेदनशील और भावुक व्यक्ति की बन गई है, जो अपनी रौ में बहता हुआ न मालूम क्या कह जाए? उनमें स्पष्ट विचार–बिन्दु और उनमें वैचारिक तारतम्य भी है, कम विश्वास होता है। यह मानने के लिए तो हम कतई तैयार नहीं हो पाते कि 'समकालीन हिंदी आलोचना' की शुरुआत का श्रेय शमशेर बहादुर सिंह को दे डालें। संयोग से शमशेर के विकास की दिशा अधिकाधिक कवि रूप की ओर मुड़ती चली गई और उन्होंने आलोचना का व्यवस्थित काम नहीं किया। यदि ऐसा नहीं होता तो शमशेर हिंदी के बहुत बड़े आलोचक हुए होते।"[1] अतः स्पष्ट होता है कि शमशेर बहादुर सिंह ने कविता लिखने से पूर्व हिंदी आलोचना विधा में अपनी विचारोत्तेजक लेखनी चलाई थी। शमशेर की आलोचनात्मक पुस्तक 'दो आब' सन 1948 ई. में आई, जबकि उनकी कविताएँ उसके बाद सन 1951 ई. में अज्ञेय द्वारा संपादित 'दूसरा सप्तक' में छह अन्य कवियों के साथ प्रकाश में आईं। दो आब के निबंधों का अध्ययन करने से लगता है कि शमशेर के पास विभिन्न प्रकार की साहित्यिक विधाओं में रचित कृतियों के आस्वादन का पूरा अनुभव था। वे उन रचनाओं के रसास्वादन के लिए उसमें डूबना और मुग्ध होना जानते थे। अतः वे मुग्ध भाव के आलोचक हैं। वे किसी भी रचना में रचनाकार से अपेक्षा रखते हैं कि वह बड़ी ही साफ़गोई के साथ, अपनी बात कहे। उनके शब्दों में– "मुझे हर वह आदमी पसंद आता है जो खुले दिल का हो, अपनी रचना में तो कम से कम और बात को कम से कम साफ़–साफ़ कहे। लहजा अटपटा हो, कोई बात नहीं। जैसा वह है, वैसा ही सामने आये।"[2] अतः स्पष्ट है कि शमशेर बहादुर सिंह किसी भी रचनाकार से कम–से–कम उसकी रचना में उससे ईमानदारी की उम्मीद करते हैं, साथ ही वे चाहते है कि रचनाकार

बिना किसी झूठ अथवा वायवीय बातों के अपनी रचना में कम से कम शब्दों में अपनी बात को साफ़–साफ़ कहे। अतः शमशेर साफ़गोई और ईमानदारी के कायल हैं। कविताओं में उन्हें कवियों द्वारा शब्दों के लम्बे और घने मकड़जाल बिल्कुल भी पसंद नहीं आते हैं। इस संदर्भ में वे लिखते हैं– "अभिव्यक्ति में यथासंभव कम से कम और नितांत आवश्यक शब्द ही होने चाहिए। सफ़ल अभिव्यक्ति का चुस्त होना बहुत आवश्यक है।"[3] शमशेर बहादुर सिंह ने मुख्यतः कविता संबन्धित सैद्धान्तिक पक्षों– कविता की रचना प्रक्रिया, काव्य–भाषा, कविता में शब्द और सम्प्रेषण का महत्व आदि बिन्दुओं पर विस्तृत चिंतन–विश्लेषण किया है। कविता की रचना प्रक्रिया और काव्य–भाषा (रचना–माध्यम) के अंतर्संबंधों पर उन्होंने लिखा है– "रचना का माध्यम हमारी रचना–प्रक्रिया को प्रभावित करता है, लेकिन हम भी अपने समय की आवश्यकताओं के अनुसार उस माध्यम को प्रभावित करते हैं।"[4] शमशेर बहादुर सिंह की वैचारिक दृष्टि में भाव, शिल्प, भाषा और बौद्धिकता का अनुपम संयोग है। उनके अनुसार एक अच्छे कवि के लिए अतिआवश्यक है कि वह अपने देश तथा भाषा की परंपरा से अच्छी तरह परिचित हो तथा इस परंपरा से सम्बद्ध कवियों–रचनाकारों का उसे निरंतर अध्ययन करते रहना चाहिए।

नई कविता के प्रतिष्ठित कवि अज्ञेय द्वारा किए गए विभिन्न काव्य–प्रयोगों के प्रति शमशेर का दृष्टिकोण काफ़ी अलग है। अज्ञेय द्वारा कविता में नये–नये प्रयोग का कारण कवि अथवा रचनाकार के आत्म–सत्य का अन्वेषण था, जबकि शमशेर की दृष्टि में प्रयोग का अर्थ है– "कलाकार के लिए सच्चे अर्थ में उबरने का एक ही रास्ता है, और वह यह है कि वह पूरे समाज के जीवन में अपने आप को मिला दे, खो न दे, मिला दे।"[5] अतः अज्ञेय के द्वारा किए गए नये–नये प्रयोगों को वे इसी दृष्टि से देखते हुए उसमें निहित कमजोरियों की ओर इंगित करते हैं। अज्ञेय के संदर्भ में शमशेर कहते है– "अक्षर का 'मर्म' ये जानते हैं, मगर फिर भी जैसे कुछ नहीं जानते ज्ञान–विज्ञान की नाना कलाओं के सागर में गोते लगाये हैं, पर जैसे खूबसूरत बहुत खूबसूरत सीपों के अलावा कोई मोती इन्हें न मिला हो। यहाँ मोती का जिक्र है यों सीपों को भी हम प्यार करते हैं, क्योंकि इन्हीं में से मोती निकाले जाते हैं। ... ... इनमें शायद वह कुछ है जिसके विरुद्ध मेरा स्वस्थ मन विद्रोह करता है पर जिन्हें बड़े आश्चर्य से भी देखता है– शायद इसलिए कि इनमें जीवन के रोग–शोक आत्मा की हाय, दैन्य, पराजय, भ्रम, कुंठा, क्रूरता आदि उघार कर रख दिए गए हों। काश कि यह काम सचेत रूप से कलाकार करता।"[6] इस प्रक्रिया में शमशेर केवल दो टूक राय देने वाले आलोचक नहीं हैं बल्कि उन्होंने अज्ञेय की कविताओं की प्रशंसा भी की है। प्रशंसा करने का उनका स्वर बहुत ही कोमल, मुलायम और मासूम बना रहता है। अज्ञेय की प्रशंसा करते हुए वे लिखते

हैं– "अज्ञेय में सबसे अधिक चीज जो मुझे मोहती है, वह उनकी व्यापक और गहरी सुरुचि... ... जिस पर भरोसा किया जा सकता है, और भावों की सच्ची गंभीरता और अभिव्यक्ति में कुछ वह सादगी सी, जो एक उस्ताद शिल्पी के यहाँ ही मिलती है। उनके वातावरण में एक क्लासिकल उदासी– मैं और किस तरह उनको व्यक्त करूँ।"[7] अतः स्पष्ट है कि अज्ञेय की कविताओं के प्रति शमशेर बहादुर सिंह की आलोचना दृष्टि केवल सख्त ही नहीं, बल्कि अत्यंत कोमल और प्रशंसात्मक भी है। शमशेर बहादुर सिंह अज्ञेय की रचनाओं से अत्यंत प्रभावित हैं। उनके संदर्भ में शमशेर उदार और प्रशंसक होने के साथ–साथ दो टूक राय देने से हिचकते नहीं हैं। उन्हें जो कहना है वह बड़ी ही साफ़गोई के साथ निर्ममतापूर्वक कह जाते हैं।

शमशेर बहादुर सिंह द्वारा रचित 'एक बिल्कुल पर्सनल एस्से' नामक आलोचनात्मक निबंध है जो कि सन 1960 ई. में 'कृति' पत्रिका में प्रकाशित हुआ था। यह निबंध रंजना अरगड़े द्वारा संपादित 'कुछ और गद्य रचनाएँ' (1992 ई.) तथा 'शमशेर बहादुर सिंह रचनावली' (2017 ई.) में भी संकलित किया गया है। इस निबंध में शमशेर ने कवि नागार्जुन की काव्य–कला पर गंभीरतापूर्वक विचार–विमर्श करते हुए लिखा है– "काश कि मैं स्वयं कभी उसकी कविताओं का चयन करता– कोई सौ–सवा सौ कविताओं का, और तब दिखा सकता, कैसे इस युग का हिंदी का सबसे बड़ा व्यंग्यकार कवि जिसको इतिहास भुलाएगा नहीं, यही कवि है।"[8] शमशेर बहादुर सिंह नागार्जुन की कविताओं से अत्यंत प्रभावित थे। वे कवि की काव्य–कला, प्रतिभा और रचनाशीलता से बहुत प्यार करते हैं। उन्होंने इस आलेख में जिसकी बहुत प्रशंसा भी की है। वे सचमुच नागार्जुन की कविता पर मुग्ध थे। शमशेर जिस रचना अथवा रचनाकार पर मुग्ध होते हैं उसी पर वे आलोचना लिखते हैं। डॉ. रामबक्ष के शब्दों में– "दरअसल वे (शमशेर) लेखक को, उसकी रचनाशीलता को बहुत प्यार करते हैं और प्यार करते हुए भी अजब ढंग से अपने होश–हवाश दुरुस्त रखते हैं। तारीफ़ करते हुए भी शमशेर झूठे नहीं लगते, तारीफ़ उनके लिए 'आड़' का काम भी नहीं करती, वरन वे तो तहे दिल से रचना पर मुग्ध होते हैं और जब मुग्ध होते हैं तभी आलोचना लिखते हैं। .. .. वे तो अपनी मुग्धता का बखान करते हैं और इस प्रक्रिया में रचना और रचनाकार की प्रकृति बताकर चुप हो जाते हैं। 'रचना और रचनाकार की प्रकृति बता देना' यही तो आलोचना का मूल धर्म है।"[9] अतः शमशेर किसी रचनाकार की झूठी प्रशंसा नहीं करते हैं बल्कि अपने आलोचनात्मक लेखों में वे उन रचनाकारों के प्रति अपनी आत्ममुग्धता का बखान कर रहे होते हैं तथा साथ ही रचना एवं रचनाकार की प्रकृति को स्पष्ट कर आलोचना और आलोचक के मूलधर्म को भी निभाते हैं।

शमशेर ने नागार्जुन को हिंदी का सबसे बड़ा व्यंग्यकार कवि कहा है। उनकी इस स्थापना को हिंदी के बहुपठित आलोचक नामवर सिंह ने भी उपयोग किया, दोनों में फर्क केवल इतना है कि नामवर सिंह ने नागार्जुन को कबीर के बाद हिंदी का सबसे बड़ा व्यंग्यकार कहा है। यथा– "इसलिए यह निर्विवाद है कि कबीर के बाद हिंदी कविता में नागार्जुन से बड़ा व्यंग्यकार अभी तक कोई नहीं हुआ।"[10] अतः स्पष्ट है कि नामवर सिंह ने जब नागार्जुन के संदर्भ में यह कथन कहा होगा तब उनके स्मरण में शमशेर बहादुर सिंह के विचार अवश्य रहे होंगे, तभी नामवर सिंह शमशेर के विचारों से सहमत हैं और उन्हें अपनी अलग शैली और अंदाज में व्यक्त करते हैं। 'एक बिल्कुल पर्सनल एस्से' नामक अपने इस आलोचनात्मक निबंध में शमशेर ने नागार्जुन के अतिरिक्त अन्य प्रिय कवि–रचनाकारों की रचनाओं पर भी विचार–विमर्श किया है। विचार–विमर्श के इस क्रम में शमशेर ने प्रगतिशील कवि त्रिलोचन शास्त्री की कविताओं के बारे में लिखा है– "उदाहरण योग्य ज्ञान, मर्म और अनुभूति से भरी सहज ही जितनी पंक्तियाँ अकेले त्रिलोचन के यहाँ संकलित की जा सकती हैं, उतनी खड़ी बोली के किसी और दूसरे हिंदी कवि के यहाँ से नहीं की जा सकती।"[11] अतः कह सकते हैं कि कविता के सौन्दर्यबोध व अभिव्यंजना को न केवल परखने बल्कि उन कविताओं का आस्वादन करने की शमशेर बहादुर सिंह की समझ सुस्पष्ट और गहरी है।

मुक्तिबोध की कविताओं के संदर्भ में शमशेर ने एक आलोचनापरक निबंध लिखा है जिसका शीर्षक है– 'एक विलक्षण प्रतिभा' यह निबंध उन्होंने मुक्तिबोध के कविता संग्रह 'चाँद का मुँह टेढ़ा है'(1964 ई.) की भूमिका के रूप में लिखा है। मुक्तिबोध को सामान्यतः दुरूह कवि तथा उनकी कविता की भाषा को जटिल माना जाता रहा है। कुछ विचारक यह मानते हैं कि मुक्तिबोध की कविता सामान्य पाठक–वर्ग की समझ से परे हैं किन्तु मुक्तिबोध के संदर्भ में शमशेर की राय बिल्कुल विपरीत है। वे आम पाठक वर्ग को मुक्तिबोध की कविताओं को पढ़ने–समझने हेतु सरल तरीकों से भी अवगत कराते हैं– "मुक्तिबोध की कविता को किसी राजदाँ की बातों की तरह सँभल–सँभलकर, सोच–सोचकर बल्कि कभी–कभी दोहरा–दोहराकर पढ़ना चाहिए। मुक्तिबोध के हर इमेज के पीछे शक्ति होती है। वे हर वर्णन को दमदार, अर्थपूर्ण और चित्रमय बनाते हैं... ... ... कुछ कवि अभिव्यक्ति के लिए विशिष्ट शब्द की खोज करते हैं, मुक्तिबोध विशिष्ट बिम्ब, बल्कि उससे अधिक विशिष्ट प्रतीक की योजना लाते हैं।"[12] शमशेर बहादुर सिंह ने नागार्जुन, त्रिलोचन, अज्ञेय, मुक्तिबोध की कविताओं के अतिरिक्त छायावाद के प्रमुख स्तम्भ कवि सुमित्रानन्दन पंत के 'पल्लविनी' (1940 ई.) तथा 'ग्राम्या' (1940 ई.), हरिवंशराय बच्चन के 'सतरंगिनी' (1945 ई.), व 'बंगाल का काल' (1940 ई.), नरेन्द्र शर्मा के 'पलाशवन' (1943 ई.), केदारनाथ अग्रवाल के 'फूल

नहीं रंग बोलते हैं' (1965 ई.), अज्ञेय द्वारा संपादित 'तार सप्तक' (1943 ई.) आदि कविता संग्रहों की भी आलोचना (समीक्षा) की है। इन आलोचनात्मक निबंधों के अतिरिक्त शमशेर बहादुर सिंह ने उर्दू कविता के प्रसिद्ध कवियों मिर्जा गालिब और इक़बाल की कविताओं पर भी अपने आलोचनात्मक विचार व्यक्त किये हैं।

शमशेर की आलोचनात्मक दृष्टि में केवल कवि ही नहीं अपितु कहानीकार भी थे, हालाँकि यह सत्य है कि उन्होंने कविता की अपेक्षा कहानी पर आलोचनात्मक लेखन बेहद कम किया है। शमशेर ने राम प्रसाद घिल्डियाल 'पहाड़ी', उपेन्द्रनाथ 'अश्क' और हिंदी व उर्दू के सेतु कहानीकार के रूप में बहु–प्रसिद्ध कृशनचंदर की कहानियों पर भी गंभीरतापरक आलोचनात्मक लेखन किया है। पहाड़ी जी की कहानी के संदर्भ में शमशेर की आलोचना–दृष्टि का एक नमूना दृष्टव्य है– "अक्सर कहानियाँ यात्रा या परदेश की छोटी–छोटी घटनाओं और इनकी याद को लेकर लिखी गई हैं। आखिरी टेक इन कहानियों में होती है मनुष्य की मजबूरी– उसकी लाचारी हालत, जिसको मानकर ही आप जीवन को समझ सकते हैं। असफ़लता और निराशा में सुलग–सुलगकर व्यक्ति मिट जाए, क्षार हो जाए ... ... वह उसकी अपनी कहानी होगी, लेकिन अपने समाज से उसका संबंध फिर भी रहता रहेगा और यही संबंध आधार तत्व होगा उस कहानी का। इन कहानियों का उद्देश्य? यही कि हमारे शहरों के बहते–बहते जीवन की ऐसी चलती तस्वीरें आँखों के आगे आती जाएँ कि अंत में हम कह उठें–'अरे, यह क्या हो गया' आखिर कुछ भी हाथ न आना था क्या? सिवाय एक पछतावे के– सो भी व्यर्थ।"[13] राम प्रसाद घिल्डियाल 'पहाड़ी' की कहानियों की आलोचना करते हुए शमशेर बहादुर सिंह ने उन कहानियों के मर्म को पकड़ने का प्रयास किया है।

निष्कर्ष:

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि शमशेर बहादुर सिंह के कवि–कर्म को अत्यंत सराहा गया लेकिन दुर्भाग्यवश उनके आलोचना–कर्म को सामान्यतः नजरअंदाज कर दिया गया। यही कारण है कि आज का पाठकवर्ग उनके आलोचना–साहित्य में छिपी अमूल्य–निधि से वंचित रह गया। उनके द्वारा लिखित आलोचनात्मक निबंध हिंदी आलोचना के सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक दोनों पक्षों को समृद्ध करते हैं। अतः उनका आलोचना–साहित्य भी उनके कवि–कर्म के समान अत्यंत सराहनीय है।

---

[1] डॉ. रामबक्ष. (2017). समकालीन हिंदी आलोचक और आलोचना. पंचकूला : हरियाणा ग्रंथ अकादमी. पृ. 208

[2] अरगड़े, रंजना (1992). (सं.). कुछ और गद्य रचनाएँ. नई दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन. पृ. 24

[3] अरगड़े, रंजना (1992). (सं.). कुछ और गद्य रचनाएँ. नई दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन. पृ. 233

[4] अरगड़े, रंजना (1992). (सं.). कुछ और गद्य रचनाएँ. नई दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन. पृ. 13

[5] मलयज. (1989). (सं.). शमशेर बहादुर सिंह की कुछ गद्य रचनाएँ. हापुड़ : संभावना प्रकाशन. पृ. 80

[6] अरगड़े, रंजना (1992). (सं.). कुछ और गद्य रचनाएँ. नई दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन. पृ. 173

[7] अरगड़े, रंजना (1992). (सं.). कुछ और गद्य रचनाएँ. नई दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन. पृ. 29

[8] अरगड़े, रंजना (1992). (सं.). कुछ और गद्य रचनाएँ. नई दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन. पृ. 18

[9] डॉ. रामबक्ष. (2017). समकालीन हिंदी आलोचक और आलोचना. पंचकूला : हरियाणा ग्रंथ अकादमी. पृ. 209–210

[10] सिंह, नामवर. (2008). (सं.). प्रतिनिधि कविताएँ : नागार्जुन. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन. पृ. 9.

[11] अरगड़े, रंजना (1992). (सं.). कुछ और गद्य रचनाएँ. नई दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन. पृ. 22

[12] अरगड़े, रंजना (1992). (सं.). कुछ और गद्य रचनाएँ. नई दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन. पृ. 188–189

[13] मलयज. (1989). (सं.). शमशेर बहादुर सिंह की कुछ गद्य रचनाएँ. हापुड़ : संभावना प्रकाशन. पृ. 90

अध्यक्ष, हिंदी विभाग, निर्वाण विश्वविद्यालय जयपुर
ईमल: premkumar.sahitya@gmail.com
दूरभाष: 9990418965, 7038096327